CHAPTER 18

1. श्रम विभाजन और जाति-प्रथा

2. मेरी कल्पना का आदर्श समाज

PAGE 157, अभ्यास - अभ्यास - पाठ के साथ

12:1:18:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:1

जाति प्रथा को श्रम -विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर: बाबा साहेब भीमरावआंबेडकर ने जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन न मानने के पीछे निम्नलिखित तर्क दिए हैं:

1. श्रम-विभाजन मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है।
2. व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसका पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।
3. व्यक्ति की क्षमताओं की पूर्णतः उपेक्षा की जाती है ।
4. उसे स्वयं अपना पेशा चुनने की स्वतंत्रता नहीं होती।
5. व्यक्ति को संकट में भी अपना व्यवसाय बदलने की अनुमति नहीं होती जिससे कभी-कभी भूखों मरने की नौबत

आ जाती है।

12:1:18:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:2

जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर: जाति-व्यवस्था पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण नहीं करती है, लेकिन मनुष्य को जीवन भर के लिए उसी पेशे से बांध देती है। यहां तक कि अगर पेशा अनुचित या अपर्याप्त है, तो वह भूखा रहेगा। उनमें से कुछ काफी सुरक्षित थे, लेकिन उनमें से कुछ बहुत सुरक्षित थे। दयनीय। ब्राह्मण जाति के लोग पूजा करते हैं और उनके पास प्रत्येक वर्ग के लिए प्रार्थना करने का अधिकार और पेशा है। यदि क्षत्रिय जाति युद्ध के लिए थी, तो सेना में उनकी नौकरी में निश्चित थी । वैश्य का व्यवसाय पर एकाधिकार था। ये सभी उच्च वर्ग में थे। निम्न वर्ग में लोहार, बढ़ई, टान्नर, धनाई, कुम्हार, कसाई आदि के काम तय होते थे। इन कार्यों के आधार पर, उनकी जाति तय की गई और उन्हें कोई अन्य काम करने की अनुमति नहीं दी गई। कुछ व्यवसायों में हर समय पैसा

उपलब्ध नहीं था। वे मौसम या आवश्यकता के आधार पर कमाते थे। वे बाकी समय बेरोजगार थे, इसलिए उन्हें भुखमरी का सामना करना पड़ा। आज लोगों को जाति के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता और क्षमता के आधार पर पेशा चुनने का अधिकार है। शिक्षा पर सभी का समान अधिकार है। शिक्षा ने लोगों की सोच और समाज में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं।

12:1:18:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:3

लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर: जाति-व्यवस्था पेशे के आवंटन और वितरण का एक दोषपूर्ण दृश्य है। जिसने पहले एक व्यक्ति, फिर एक समूह और फिर समाज को कई वर्गों में विभाजित किया और कुछ मनुष्यों को शोकग्रस्त किया और उन्हें सदियों से अंतहीन अंधेरी सुरंग में धकेल दिया। लेखक के अनुसार, दासता केवल कानूनी अधीनता नहीं है। लेकिन इसकी व्यापक परिभाषा अपनी आजीविका और पेशा चुनने के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता देने की नहीं है। सामाजिक गुलामी की स्थिति में, कुछ लोगों को दूसरों द्वारा तय किए गए व्यवहार और

कर्तव्यों का पालन करना पड़ता है और वह है गुलामी। अपनी क्षमता के विपरीत जन्म / पारंपरिक या पैतृक पेशे को अपनाने की मजबूरी एक व्यापक "दासता" है।

12:1:18:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:4

शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' के एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर: यह सर्वविदित है कि स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को समाज में रहते हुए अपनी पूरी क्षमता विकसित करने का भी अधिकार है। इस आधार पर सभी के साथ समान व्यवहार करना हमारा कर्तव्य है। हम उसके समुचित निर्माण के साथ-साथ समाज का व्ही समुचित विकास करते हैं।

अम्बेडकर जी का तर्क है कि भौतिक वंश और सामाजिक उत्तराधिकार के दृष्टिकोण से मनुष्यों में असमानता संभव होने के बावजूद, "समता" एक व्यवहार्य सिद्धांत है कि हर किसी को समाज के सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता

प्राप्त करने की अपनी क्षमता विकसित करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

12:1:18:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:5

सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसका प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया गया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर: अम्बेडकर जी की बात से हर किसी को सहमत होना चाहिए कि उन्होंने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है । किसी भी समाज में भावनात्मक समत्व तभी आ सकता है जब सभी को समान भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध होंगी । समाज में जाति-प्रथा के उन्मूलन के लिए समता ही आवश्यक तत्व है । मनुष्यों के प्रयासों का निष्पक्ष मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को अवसर भी समान मिले,उदाहरण-गाँव की पाठशाला और शहर के कान्वेंट में पढने वाले बच्चों का सही मूल्यांकन हम कर सकते हैं क्या?अतः पहले जातिवाद का उन्मूलन हो,सभी

को समान भौतिक सुविधाएं मिलें और उसके पश्चात् जो भी श्रेष्ठ हो वही उत्तम व्यवहार के हक़दार हों ।

12:1:18:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:6

आदर्श समाज के तीन तत्त्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं ? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं ? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/समझेंगी?

उत्तर: लेखक ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को एक आदर्श समाज के आवश्यक तत्व के रूप में वर्णित किया है। उन्होंने इस लेख में महिलाओं को आदर्श समाज में शामिल नहीं किया है। शब्द "भ्रातृता" गलत नहीं है, इसका उपयोग सीमित है। इसलिए हम इसे समझने में भूल कर सकते हैं लेकिन इस शब्द "भ्रातृता" का अर्थ जानने से स्पष्ट हो जाएगा। इस शब्द का दूसरा शब्द है 'भाईचारा'यह एक दूसरे को भाई के रूप में स्वीकार करने की भावना है। हालाँकि, यह केवल जाति के लिए हो रहा है। महिलाओं का जाति भी इस वर्गीकरण में है। वह इससे अलग नहीं है। हां, खुद "महिला"

की भी एक प्रजाति है। लैंगिक भेदभाव को लेकर एक लड़ाई अपने आप चल रही है, इसलिए अंबेडकर इस पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना में शामिल नहीं थे।